

Review Article

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शिक्षा की प्रासंगिकता का विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

डॉ. संजय कुमार ^{1*}, पूनम यादव ²

¹असि.प्रो. विभागाध्यक्ष, शिक्षा विद्यापीठ, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

sanjaykimaraya7@gmail.com

² शोधछात्रा, शिक्षा विद्यापीठ, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

संप्रेषण लेखक: sanjaykimaraya7@gmail.com

DOI-10.55083/irjeas.2026.v14i01005

©2026 Dr. Sanjay Kumar et.al.

This is an article under the CC-BY license. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

सारांशिका: वैदिक साहित्य के अंतर्गत स्मृति शाखा की एक सार्वकालिक और बहुआयामी रचना श्रीमद्भगवद्गीता है, जो मानव जीवन के लिए कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वित मार्ग प्रस्तुत करती है। श्रीमद्भगवद्गीता जय संहिता अर्थात महाभारत के भीष्मपर्व का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसमें अर्जुन और श्रीकृष्ण के मध्य हुए संवाद को उपदेशों के माध्यम से उत्कीर्ण किया गया है। वर्तमान कृत्रिम बुद्धि के युग में श्रीमद्भगवद्गीता को केवल एक धार्मिक ग्रंथ के रूप में न देखकर, नैतिक शिक्षा, नेतृत्व विकास, प्रबंधन, प्रशासन और मानसिक स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में भी अध्ययन किया जा रहा है। इसके पश्चात भी बदलते सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक परिदृश्य में श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर केंद्रित समग्र अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है और भविष्य के विकसित भारत में भी बनी रहेगी।

सूचना क्रांति ने मनुष्य के समक्ष अनेकानेक मानसिक और समाजिक चुनौतियों को ला खड़ा किया है जिनका समाधान न मिलने से आज का युवा भ्रमित और तनाव से ग्रसित होता जा रहा है। आध्यात्मिकता भारत का मूल स्वभाव है जो धार्मिक स्थलों पर बड़ते जनसैलाव से भी स्पष्ट होता है। परन्तु ये धार्मिक यात्रायें भी उसकी मानसिक और सामाजिक चुनौतियों को कम नहीं कर पा रही हैं। अंत में उसकी दृष्टि कुरुक्षेत्र के रण में विरोधी सेनाओं से घिरे और नंदी घोष रथ पर विराजमान योगीराज श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य हुए संवाद की ओर जाती है। यही संवाद श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से विश्वविख्यात होता है जिसमें भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग की शिक्षा को बहुत ही विस्तृत ढंग से समझाया गया है।

वैदिक भारत में कर्म योग की ही प्रधानता थी जो समाज की संरचना को भी संतुलित करता था। मानव का निष्काम कर्म ही उसका मूल धर्म था जिसमें भक्ति और योग भी समाहित रहता था। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता को विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करना है।

संकेत शब्द : श्रीमद्भगवद्गीता, शिक्षा, प्रासंगिकता, विकसित भारत

प्रस्तावना: जय संहिता अर्थात महाभारत के 18 मुख्य पर्वों में से एक भीष्म पर्व (खण्ड) का प्रमुख अध्याय श्रीमद्भगवद् गीता है जिसने महाभारत के सम्पूर्ण परिदृश्य को ही परिवर्तित कर दिया था। यदि श्रीमद्भगवद् गीता अर्थात योगेश्वर श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र की समर भूमि में योद्धाओं से घिरे होने पर भी युद्ध से 45 मिनट पूर्व की समायोधि में श्रीमद्भगवद् गीता का अलौकिक ज्ञान नहीं देते तो शायद धनुर्धारी कुन्ती पुत्र अर्जुन कभी युद्ध नहीं करता। कर्तव्य विमुख हुये अर्जुन को कर्म की

श्रेष्ठता का साक्षात्कार कराना वासुदेव श्रीकृष्ण का मुख्य ध्येय था ताकि भविष्य की संताने कर्तव्य पथ से विमुख न हों और सदैव धर्म के मार्ग का अनुसरण करें। अनैति और अन्याय के विरुद्ध धर्मयुद्ध का साथ दें (पोद्दार, 2020)।

आज से लगभग छः हजार वर्ष पूर्व जो शैक्षिक ज्ञान श्रीमद्भगवद् गीता के रूप में वासुदेव श्रीकृष्ण ने अपने सखा पार्थ अर्जुन को दिया था उसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी उतनी ही है जितनी महाभारत के युद्ध से पूर्व अर्जुन के लिए थी। इसका महत्व अनंतकाल तक रहेगा। इसमें कुल 18 पर्व और 700 श्लोक हैं। भाष्यकारों ने इसके ऊपर अनेकानेक भाष्य लिखे हैं जिनमें यह पता लगाना बहुत चुनौतीपूर्ण है कि कौ-सा भाष्य प्रामाणिक और प्रासंगिक है (गोयल, 2014)।

श्रीमद्भगवद्गीता को मूल रूप से देववाणी संस्कृत में लिखा गया है जिसका विश्व की 75 से अधिक भाषाओं में भाष्य लिखा जा चुका है। अकेले आंग्ल भाषा में ही इस पर 300 से अधिक भाष्य उपलब्ध हैं। हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, गुजराती और गुरुमुखी आदि सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी, जापानी, अरबी आदि भाषाओं में भी इसके भाष्य उपलब्ध हैं। सबसे पहला आंग्ल भाषा में इसका भाष्य चार्ल्स विल्किंस द्वारा वर्ष 1785 में लिखा गया (DOIKS, 2025)। भारतीय विद्वान यामुनाचार्य ने गीतार्थसंग्रह और रामानुजाचार्य ने गीताभाष्य लिखे हैं। परंतु सर्वाधिक प्रभावी संस्करण भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा रचित भगवद् गीता यथारूप है जो आज के समय में पचास से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है। वनीमीडिया की एक परियोजना के अंतर्गत श्रीमद्भगवद्गीता को एक सौ आठ से अधिक भाषाओं में अनुवादित करने का लक्ष्य है। यह ग्रंथ भारतीय उपमहाद्वीप की कई स्थानीय भाषाओं और बोलियों में भी उपलब्ध है। इसके बाद भी नियमित रूप से नित नवीन भाषाओं में इस अलौकिक ग्रंथ का अनुवाद किया जा रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता जैसे कालजयी ग्रंथ पर अनेक शोधकर्ताओं ने शोध किए हैं और वर्तमान समय में भी किए जा रहे हैं तथा भविष्य के विकसित भारत में भी इस ग्रंथ पर उत्कृष्ट शोध होते रहेंगे।

श्रीमद्भगवद्गीता में शिक्षा को ज्ञान के संदर्भ में आत्मसात किया गया है। इसकी शिक्षाएं व्यक्ति में निहित परमात्मा की अनुभूति करने में सहायक हैं। विकसित भारत के संदर्भ में इसकी विशेषताएँ इस तरह से अपनी भूमिका का निर्वहन करने में सहायक होंगी।

- मानसिक स्वास्थ्य
- सामाजिक व्यवहार
- चुनौतियों के समय विचलित न होना
- जाति की अपेक्षा ज्ञान, भक्ति और कर्म की महत्ता
- नेतृत्व और प्रबंधन
- प्रकृति संरक्षण और गौ वंश का संरक्षण
- नैतिकता और मित्र भाव के साथ परोपकारिता
- तकनीकी सुशासन के साथ महिला उत्थान
- मार्गदर्शन और परामर्शन पर आधारित संप्रेषण कौशल
- युद्ध कौशल और रणनीति

शोधकर्ता द्वय द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया गया जिसमें प्रमुख शोध अध्ययन इस प्रकार हैं-

शर्मा, बी. एवं अग्रवाल, एन. (2022) ने 'वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध अध्ययन किया और इसके निष्कर्ष में पाया कि वर्तमान परिस्थिति में विशेष रूप से शिक्षा के पथ पर पुनः लौटने में श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित शैक्षिक मूल्य बहुत ही प्रभावी और उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

मिश्रा, डी. (2017) ने अपने शोध अध्ययन 'गीता की स्थितप्रज्ञ एवं श्री अरविंद की अति मानसिक अवस्था का तुलनात्मक अध्ययन' में पाया कि ब्रह्म को जान लेने वाले व्यक्ति की स्थिति स्थितप्रज्ञ है। इस अवस्था को प्राप्त व्यक्ति कभी मोहित नहीं होता और न ही सुख-दुख उसे विचलित कर पाते हैं। श्री अरविंद के दृष्टिकोण में अति मानसिक मानव आध्यात्मिक मानव की परिणिति है। जहां श्रीकृष्ण ने पूर्ण इंद्रिय संयम के द्वारा स्थितप्रज्ञ को प्रमाणित किया है तो वहीं श्रीअरविंद ने अति मानसिक चैतन्य को ही अति मानसिक मानव की संज्ञा दी है।

मौर्य, एन.(2016) ने अपने अध्ययन 'गीता में कर्मयोग, निष्काम एवं कर्मवाद एक तुलनात्मक अध्ययन' में पाया कि वर्तमान समय में शिक्षित व्यक्ति जिस कर्मवाद के पीछे सम्मोहित हो रहा है उसे आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान नहीं है। वह केवल भौतिक जीवन का आदर्श सामने रखकर विविध कार्यों में संलग्न है।

उपरोक्त के अतिरिक्त यादव, एस. एन.(2021), शुक्ल, पी.पी. (2016), शर्मा, आर. (2015), त्रिपाठी, पी. (2014), सिंह, आर. (2013), सिंह, एस.(2012), गुप्ता, जे. (2011),मौर्य, एम. पी. (2011), सिंह, ए.. (2010), सिंह, आर. आर. (2009), सिंह, एस.. (2009) और शर्मा, वी. (2007) आदि अनेकानेक शोधकर्ताओं ने श्रीमद्भगवद्गीता पर शोध अध्ययन किया है। उपर्युक्त साहित्य के पुनरावलोकन से शोधार्थी द्वय को ज्ञात हुआ कि- सभी शोधकर्ताओं के अध्ययन के केंद्र में कर्म योग,

ज्ञान योग और भक्ति योग है। परंतु किसी भी शोध में विकसित भारत के सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता को रेखांकित नहीं किया गया है। इसी शोध-अंतराल को पूर्ण करने का प्रयास शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है जिसके निहितार्थ शोधार्थी द्वय के मन-मस्तिष्क में प्रश्नों का प्रादुर्भाव हुआ जिनके आधार पर निम्नलिखित शोध उद्देश्यों को संरचित किया गया है -

1. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

1. शोध प्रविधि

शोधकार्य एक व्यवस्थित, सुनियोजित, उद्देश्यपूर्ण और वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति क्रमबद्ध ढंग से वैज्ञानिक विधि के माध्यम से की जाती है, फिर चाहे वे शोध प्राकृतिक विज्ञान से संबंधित हों अथवा समाज या शिक्षा से संबंध रखते हों। प्राचीनकाल से ही भारत शिक्षा का केंद्र और विश्वगुरु रहा है। वर्तमान समय में तकनीकी विकास ने भारतीय शिक्षा, समाज और संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया है, परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी भारत की आत्मा उसके आध्यात्मिक ज्ञानक्षेत्र में विचरती है।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक और ऐतिहासिक होने के कारण शोधकर्ताओं द्वारा शोध हेतु दार्शनिक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों को आत्मसात किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिनके संकलन हेतु मूल श्रीमद्भगवद्गीता पर लिखे गए ग्रंथों, पुस्तकों, शोधपत्रों, आलेखों, पत्र-पत्रिकाओं और प्रकाशित शोध-प्रबंधों आदि का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन श्रीमद्भगवद्गीता के अटठारह अध्यायों में से उन श्लोकों तक परिसीमित था जिनकी शैक्षिक दृष्टि से प्रासंगिकता वर्तमान अतुल्य भारत के साथ ही भविष्य के विकसित भारत में भी हो। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु विषय-वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है जो कि गुणात्मक शोध अध्ययनों हेतु सबसे विश्वसनीय विधि मानी जाती है।

2. श्रीमद्भगवद् गीता में निहित शिक्षा की प्रासंगिकता और विकसित भारत

डॉ. एस. राधाकृष्णन अपजी प्रसिद्द पुस्तक भारतीय दर्शन-1 में लिखते हैं कि- *श्रीमद्भगवद्गीता सबसे अधिक सुन्दर और यथार्थ अर्थों में संभवतः एक मात्र भारतीय दार्शनिक गीत है जो किसी ज्ञात भाषा में लिखा गया है* (राधाकृष्णन, 2017)।

शब्दशास्त्र की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान और शिक्षा का वह कालातीत और सार्वभौमिक शब्द है जो जटिल दार्शनिक सिद्धांतों को सरल, रसात्मक और कल्याणकारी जीवनशैली में बदलता है। यह गूढ़ शब्द की श्रेणी में आता है जो तीन संयुक्त शब्दों के संयुग्मन से निर्मित है। ये संयुक्त शब्द हैं, श्रीमद् + भगवद् + गीता। इसमें श्रीमद् शब्द का आशय है पवित्रता से युक्त अथवा सुन्दरता से युक्त, भगवद् शब्द का तात्पर्य है परमात्मा अर्थात् स्वयं वासुदेव और गीता शब्द का अर्थ होता है गीत या गायन। इस तरह श्रीमद्भगवद्गीता का शाब्दिक अर्थ होता है पवित्रता से युक्त परमात्मा द्वारा गाया गया एक सुन्दर गीत अर्थात् श्रीकृष्ण द्वारा गाया गया एक पवित्र गीत। सामान्यतः योग के अनेक अंग हैं लेकिन योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग को ही मानव के कल्याण का प्रमुख साधन माना है। योगेश्वर श्रीकृष्ण 64 कलाओं से परिपूर्ण एक पूर्ण और योगी पुरुष थे इसलिए उनके श्री मुख से उद्गारित इस पवित्र गीत को योगशास्त्र भी कहा माना जाता है जिसमें योग मार्ग द्वारा आत्म-कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करने की शिक्षा दी गयी है। यह आध्यात्मिक सिद्धांतों और शिक्षाओं को जनसामान्य के लिये सुलभ, सुगम और बोधगम्य बनाता है, इसलिए इसे परमहंस संहिता भी कहा जाता है। यह भारतीय विचारधारा में सर्वाधिक प्रभावशाली और अनुकरणीय ग्रन्थ है जिसमें निहित प्रमुख शिक्षाएं इस प्रकार हैं -

- **निष्काम कर्मयोग-** श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय अर्थात् सांख्य योग का 47वाँ श्लोक कर्मयोग का सबसे प्रमुख मंत्र माना जाता है, जो निष्काम कर्म की शिक्षा देता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 2.47)

योगेश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे पार्थ अर्जुन! तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, उसके फल में कभी नहीं। इसलिए तुम कर्मों के फल का कारण मत बनो और तुम्हारी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

कर्मयोग पर केन्द्रित अन्य श्लोकों में माधव कहते हैं कि-

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः। (श्रीमद्भगवद्गीता 3.8)

हे पार्थ : अपना कर्तव्य कर्म करो, क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजयः। (श्रीमद्भगवद्गीता 2.48)

हे पार्थ : आसक्ति त्यागकर, सफलता-असफलता को समान मानकर कर्मयोग में स्थित होकर कर्म करो।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः (श्रीमद्भगवद्गीता 5.10)

हे पार्थ: जो व्यक्ति कर्मों को भगवान को समर्पित करके, आसक्ति रहित होकर कर्म करता है, वह पाप से वैसे ही लिप्त नहीं होता जैसे कमल का पत्ता जल से।

अतः तृष्णा के अभाव में मनुष्य कर्म करते हुए कर्म-फल का कारण नहीं बनता। निष्काम कर्म को ही श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग कहा गया है।

- **आत्मा की अमरता-** श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय अर्थात् सांख्य योग का 20वां श्लोक आत्मा की अमरता का सबसे प्रमुख श्लोक है। यह हमें शिक्षा देता है कि आत्मा अजर-अमर है। यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, यह मानव शरीर के नाश होने पर भी नष्ट नहीं होती।

न जायते म्रियते वा कदाचि त्रायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 2.20)

योगेश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे पार्थ अर्जुन! यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मती है और न मरती ही है। यह उत्पन्न होकर फिर होने वाली ही है। क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है; शरीर के समाप्त पर भी यह नहीं मरती।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 2.23)

हे पार्थ: आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है, न जल गीला कर सकता है और न वायु सुखा सकती है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ (भगवद्गीता 2.22)

हे पार्थ अर्जुन: जिस प्रकार मनुष्य पुराने और जीर्ण-क्षीर्ण वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है। ठीक उसी प्रकार जीवात्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नए शरीर को धारण करती है। यह भावआत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता को दर्शाता है।

अतः आत्मा के वास्तविक स्वरूप और उसकी अमरता को समझाते हुए माधव कहते हैं कि शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा अमर है और भौतिक तत्वों से अप्रभावित रहती है।। क्योंकि जीवात्मा शाश्वत और अविनाशी है।

- **परिवर्तन-** श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय अर्थात् सांख्य योग का 20वां श्लोक कर्म में कुशलता और परिवर्तन अर्थात् समत्व के नियम को बताता है। यह श्लोक इस प्रकार है-

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ (भगवद्गीता 2.50)

हे पार्थ अर्जुन: समबुद्धि से युक्त पुरुष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् ऐसा व्यक्ति इनसे मुक्त हो जाता है। इसलिए तू समत्व में लग जा। यह समत्व रूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्म बन्धन से छूटने का उपाय है।

अतः परिवर्तन ही जीवन का नियम है। प्रत्येक वस्तु जो आज आपकी है। वह कल किसी और की होगी। इसलिए परिवर्तन को सहज स्वीकार करें।

- **आत्म-नियंत्रण-** मन अशांत है, लेकिन अभ्यास और वैराग्य से इसे वश में किया जा सकता है। एक शांत मन ही सफलता की कुंजी है। श्रीमद्भगवद्गीता का सबसे व्यावहारिक श्लोक छठवे अध्याय का 26वां श्लोक है। यह चंचल मन को वश में करने की शिक्षा देता है।

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥ (भगवद्गीता 6.26)

हे पार्थ अर्जुन: यह चंचल और स्थिर न रहने वाला मन जहाँ-जहाँ अर्थात् विषयों में जाता है। उसे वहाँ जाने से रोककर आत्मा के नियंत्रण में करना चाहिए। मन की कार्यप्रणाली, इच्छाओं के उत्पन्न होने के कारणों और जागृत बुद्धि के माध्यम से चिरस्थायी स्वतंत्रता की प्राप्ति का मार्ग बताती है। यह श्लोक मन पर प्रभुत्व स्थापित करने और आत्म-नियंत्रण विकसित करने की विधि का अन्वेषण करता है।

मानव अक्सर यह मानता है कि वह अपने विचारों और आवेगों के अधीन है। वासुदेव श्रीकृष्ण भगवद् गीता में इस अवधारणा को चुनौती देते हुए कहते हैं कि मन हमारा अस्तित्व नहीं है। यह तो केवल एक साधन है। हम आत्मा हैं और आत्मा का कार्य मन को नियंत्रित करना है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुये द्वितीय अध्याय के 39वे श्लोक में योगेश्वर श्रीकृष्ण बुद्धि योग का परिचय देते हैं।

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।

बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ (भगवद्गीता 2.39)

हे पार्थ: अब तक मैंने तुम्हें सांख्य योग अर्थात् आत्मा के स्वरूप के बारे में विश्लेषणात्मक ज्ञान समझाया है। अब सुनो, हे पार्थ, क्योंकि मैं बुद्धि योग अर्थात् बुद्धि का योग प्रकट करता हूँ। जब तुम इस समझ के साथ कर्म करोगे तब तुम कर्म के बंधन से मुक्त हो जाओगे।

अतः बुद्धि योग का आशय है बुद्धि का उच्चतर ज्ञान के साथ समन्वय स्थापित करना। अपने स्वरूप की सत्यता को समझना और यह जानना कि वास्तव में सुख किससे मिलता है? एक बार बुद्धि शुद्ध और सशक्त हो जाने पर वह मन को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाती है न कि उसके वश में होने से।

- **ईश्वर के प्रति समर्पण-** श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का सबसे महत्वपूर्ण श्लोक 18वे अध्याय का 66वां श्लोक है जिसमें श्रीकृष्ण कहते हैं कि सब कुछ तागकर केवल उनकी शरण में आने से मोक्ष मिलता है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (भगवद्गीता 18. 66)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन: सभी धर्मों अर्थात् कर्तव्यों को त्याग कर केवल मेरी शरण में आओ। मैं श्रीकृष्ण तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा इसलिए शोक मत करो।

अतः धर्म वास्तव में वे निर्धारित कर्म हैं जो मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति और प्रगति के लिए सहायक होते हैं। सभी कर्मों को भगवान को समर्पित करें और प्रत्येक परिस्थिति में उन पर अटूट विश्वास रखें। ईश्वर सदैव धर्म और सत्य मार्ग पर चलने वाले शरणागत की रक्षा करते हैं।

- **ज्ञान का महत्त्व-** श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय के 34वे श्लोक में सत्य ज्ञान प्राप्ति का मार्ग बताया गया है जिसमें श्रीकृष्ण कहते हैं कि तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने के लिए तुम्हें तत्त्वदर्शी अर्थात् सत्य का अनुभव करने वाले ज्ञानी गुरु के पास जाना चाहिए। उनके चरण वंदन और सेवा करनी चाहिए तथा कपट मुक्त होकर अपनी जिज्ञासा उनके समक्ष रखनी चाहिए। वे ज्ञानी गुरु तुम्हें वह परम ज्ञान देंगे। यह श्लोक गुरु की महत्ता और शिष्य की विनम्रता पर बल देता है जो सत्य ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक शर्त है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ (भगवद्गीता 4. 34)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन: उस परम ज्ञान को तुम तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के समीप जाकर समझो। उन्हें पूरी तरह से दण्डवत् करने से और उनकी सेवा करने से तथा कपट छोड़कर सरलता से प्रश्न पूछने से। वे ज्ञानी महात्मा तुम्हें उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥ (भगवद्गीता 4.38)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन: इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। जो मनुष्य योग के द्वारा शुद्ध हो जाता है। वह इस ज्ञान को समय आने पर स्वयं अपनी आत्मा में अनुभव कर लेता है।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥ (भगवद्गीता 4.39)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन: जितेंद्रिय, तत्पर और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त होने पर वह बिना किसी देरी के परम शांति को प्राप्त हो जाता है।

अतः सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान केवल गुरु के माध्यम से ही मिल सकता है। इसके लिए शिष्य को विनम्र, सेवाभावी और जिज्ञासु होना चाहिए, ताकि गुरु उसे ज्ञान दे सकें। तीन तरीकों अर्थात् प्रणाम, प्रश्न और सेवा से शिष्य गुरु से जुड़कर ज्ञान प्राप्त करता है। वे ही शिक्षक ज्ञान दे सकते हैं जिन्होंने स्वयं सत्य का साक्षात्कार किया है दिव्य ज्ञान ही सब प्रकार के विकारों से मुक्ति दिलाता है और कर्मों का शमन करता है। सांसारिक अज्ञानता से मुक्ति के लिए ज्ञान ही सबसे पवित्र है। ज्ञान से ही मन का भ्रम दूर होता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवद् गीता में निहित शिक्षाओं की प्रासंगिकता आज से लगभग छः हजार वर्ष पूर्व आर्यवर्त में भी थी, वर्तमान भारत में भी है और भविष्य के विकसित भारत में भी रहेगी। विकसित भारत की संकल्पना कोई नवीन विचार नहीं है। भारत वैदिक कालखंड से ही विकसित रहा है। जिन देशों को वर्तमान समय में विकसित देशों की श्रेणी में रखा जाता है, वे दो हजार वर्ष पूर्व खानाबदोश जीवनयापन करते थे। वही दूसरी ओर तत्कालीन भारत सोने की चिड़िया के रूप में परिवर्तित हो चुका था अर्थात् पूर्णतः विकसित सभ्यता और संस्कृति वाला अखंड भारत, विकसित भारत था। गत एक हजार का कालखंड भारत के लिए चुनौतियों वाला रहा जिसमें विदेशी अक्रांताओं के आक्रमणों ने इस सोने की चिड़िया के नाम से संबोधित किए जाने वाले विकसित भारत को जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय और क्षेत्र आदि में विभाजित कर रुग्ण राष्ट्र बना दिया। लेकिन वर्तमान भारत पुनः अपने स्वर्णिम इतिहास की पुनरावृत्ति की ओर अग्रसर है। वर्तमान भारत विश्व का सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश है जिसकी ओर वैश्विक जगत नेतृत्व करने की दृष्टि से निहार रहा है। इसी संकल्पना को साकार रूप देने के लिए माननीय पूर्व राष्ट्रपति और वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने इंडिया विजन 2020 का लक्ष्य भारत के शासन, प्रशासन और नागरिकों को दिया था। इंडिया विजन 2020 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने एक विकसित भारत का सपना देखा था और अपनी पुस्तक इंडिया 2020: विजन फॉर न्यू मिलेनियम के माध्यम से इसका विस्तृत रोडमैप प्रस्तुत किया। डॉ. कलाम ने विजन विकसित भारत @2047 को वर्षों पूर्व एक भविष्य की दृष्टि दी जिसे एस.पी. गुप्ता समिति ने योजनाबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया और वर्तमान सरकार इसे धरातल पर उतारने का कार्य कर रही है।

क्योंकि भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शतकीय वर्षगाँठ मनाने की तैयारी कर रहा है इसलिये विकसित भारत@2047 विज़न का उद्देश्य सभी क्षेत्रों में तीव्र सुधारों के माध्यम से देश को तीस ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की विकसित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। यह विज़न मुख्य रूप से युवा, गरीब, महिलाएं और किसान जैसे चार स्तंभों पर केंद्रित है। इसमें तकनीकी विकास, बुनियादी ढांचे का विस्तार, समावेशी विकास और टिकाऊ समाधानों पर बल दिया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये शासन, अर्थव्यवस्था, कृषि, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में साहसिक सुधारों की आवश्यकता है। ये परिवर्तनकारी उपाय समावेशी विकास, वैश्विक प्रतिस्पर्द्धात्मकता, सतत् विकास को बढ़ावा देंगे और भारत की विश्वगुरु के रूप में वैश्विक स्थिति को सशक्त करेंगे (MoE)।



चित्र संख्या -1 विकसित भारत के चार स्तम्भ

विकसित भारत के निर्माण में श्रीमद्भगवद् गीता की शिक्षाएं नैतिक, मानसिक और सामाजिक आधार के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसकी शिक्षाएं निःस्वार्थ कर्म, सतत प्रयास, मानसिक संतुलन और कर्तव्यपरायणता आदि के बीच संतुलन स्थापित करके एक ऐसे विकसित राष्ट्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगी जो तकनीकी रूप से उन्नत होने के साथ-साथ नैतिक और समग्र रूप से संतुलित होगा। स्तम्भविकसित भारत के विषय में श्रीमद्भगवद् गीता एक ऐसे विकास प्रारूप की वकालत करती है जो केवल भौतिकवादी नहीं बल्कि समग्र हो, अनुकरणीय न होकर प्रामाणिक हो और खंडित न होकर एकीकृत और अखण्ड भारत हो।

3. विश्लेषण

श्रीमद्भगवद् गीता में काल का कोई बंधन नहीं है। इसमें जो विचार हैं वह सभी बंधनों से मुक्त हैं। श्रीमद्भगवद् गीता के 13वें अध्याय में सात से लेकर 11वें श्लोक में श्रीकृष्ण ने ज्ञान के विषय में कहा है कि कुटिलता, हिंसा, असहिष्णुता, अहंकार और कर्महीनता आदि दुर्गुणों और इंद्रिय तृप्ति के विषयों का परित्याग करके जीवन को सरलता, पवित्रता, स्थिरता, आत्म संयम और कर्म शीलता कि ओर उन्मुख करना चाहिए। अच्छी तथा बुरी घटनाओं के प्रति समभाव, एकांत स्थान में रहने की इच्छा, जन समूह से बिलगाव, आत्म साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना तथा परम सत्य की खोज ही सत्य ज्ञान है। इनके अतिरिक्त जो भी है वह सब आज्ञान है। इस दृष्टि से श्रीमद्भगवद् गीता में निहित शिक्षाओं को इंद्रिय नियंत्रण की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जो वर्तमान और भविष्य के विकसित भारत के नागरिक समाज की मूलभूत विशेषताएं होनी चाहिए। मन पर नियंत्रण से व्यक्ति के अंदर संतुलित व्यक्तित्व का प्रस्फुटन होता है। इसमें काम, क्रोध और लोभ को नर्क का द्वार बताते हुए इससे छुटकारा पाने तथा स्वभाव के अनुसार कर्म करने का मार्ग बताया गया है। श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य हुये संवाद के माध्यम से चुनौतियों का समाधान खोजा जा सकता है। कर्म योग व्यक्ति को क्रिया द्वारा सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। श्रीमद्भगवद् गीता में तत्वज्ञानी गुरु को श्रेष्ठतम रूप में स्वीकार किया गया है जो अपने शिष्य के अज्ञान का निराकरण करते हुए उसे मानसिक द्वंद्वों से मुक्त करने में उसकी सहायता करता है। उसे सत्यज्ञान की आत्मानुभूति कराकर जगत से तदात्मीकरण स्थापित करने में सहायता करता है। अतः श्रीमद्भगवद् गीता के प्रथम अध्याय से लेकर अंतिम अध्याय तक की यात्रा अवसाद से प्रसाद तक पहुँचने की है मध्य में जो भी प्रसंग हैं, वे सभ इस यात्रा के पड़ाव हैं। इन पड़ावों का भी अपना महत्व है जो मन को मलिन होने से बचाता है।

4. निष्कर्ष और सुझाव

श्रीमद्भगवद् गीता वेदों की मान्यताओं को पुनः स्थापित करने वाला आस्तिक भारतीय दर्शन है। यह मात्र एक सैद्धांतिक ग्रंथ नहीं है अपितु यह मानव जीवन का संविधान है। वासुदेव श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद् गीता में जो भी शिक्षाएं दी हैं वे सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं। विकसित भारत की संकल्पना इसकी शिक्षाओं के बिना अपूर्ण है। इसमें निहित शिक्षाओं यथा; कर्म, ज्ञान और भक्ति आदि के विश्लेषण से शोधकर्ता द्वय इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वर्तमान अतुल्य भारत और भविष्य के विकसित भारत में श्रीमद्भगवद् गीता की शिक्षाओं की प्रासंगिकता और उपादेयता है और सदैव रहेगी। इनके बिना विकसित भारत ऐसा ही होगा जैसे बिना पतवार की नौका। विकसित भारत में शासन, अर्थव्यवस्था, कृषि, शिक्षा, सुरक्षा और प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों सर्वांगीण और सतत उन्नति के लिए भी श्रीमद्भगवद् गीता की शिक्षाओं का महत्व बना रहेगा। इसके अतिरिक्त इसकी शिक्षाएं विकसित भारत के जिम्मेदार नागरिकों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में भी उपयोगी सिद्ध होंगी। इसके लिए निम्नलिखित सुझावों का अनुसरण किया जा सकता है।

- एआई के अधिक उपयोग से मानसिक विकारों से मुक्त नागरिकों को मानसिक स्वास्थ्य लाभ देने में सहायक।
- सामाजिक व्यवहार को सशक्त करने में उपयोगी।
- चुनौतियों के समय विचलित न होने में सहायक।
- मत-मतांतर, जाति, क्षेत्र, वर्ग, लिंग आदि की अपेक्षा ज्ञान, भक्ति और कर्म की महत्ता।
- वित्तीय संस्थाओं के नेतृत्व और प्रबंधन हेतु कुशल और दूरदर्शी मानवीय संसाधनों की उपलब्धता में सहायक।
- प्रकृति और गौवश के संरक्षण संरक्षण में उपयोगी।
- नैतिकता और मित्रता के साथ परोपकारिता के भाव को सुदृढ़ करने में उपयोगी।
- तकनीकी सुशासन के साथ महिला उत्थान में सहायक।
- मार्गदर्शन और परामर्शन पर आधारित संप्रेषण कौशल को सुदृढ़ करने में उपयोगी।
- विकसित भारत को प्रतिद्वंद्वी देशों के विरुद्ध सैन्य और युद्ध कौशल तथा रणनीति के निर्माण में उपयोगी।
- भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करके और उसे देशकाल, परिस्थिति तथा वातावरण के अनुरूप बनाने में प्रासंगिकता एवं उपयोगी।

5. सन्दर्भ

- [1]. गुप्ता, के. डी. (2003). *मानव जीवन में गीता दर्शन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन*, नई दिल्ली : अटलांटिक पब्लिशर्स।
- [2]. कोठारी, सी. आर. (2004). *शोध प्रविधि विधियाँ एवं तकनीकी (द्वितीय संस्करण)*, नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल।
- [3]. सिंघल, ए. (2006). *आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन (प्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा शास्त्र)*, झाँसी: बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय।
- [4]. रानी, पी. (2013). द इफेक्ट ऑफ़ श्रीमद्भगवद्गीता इन द सेनारियो ऑफ़ एजुकेशन, शोध संचयन, Vol. 4, Issue 2, ISSN 2249-9180 Retrieved 24/01/2026/ from Shodh Sanchayan
- [5]. प्रभुपाद, एस. सी. (2013). *श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप*, मुंबई: भक्ति वेदांत बुक ट्रस्ट।
- [6]. गोयल, पी.के. (2014). *श्रीमद्भगवद्गीता एक दार्शनिक एवं शैक्षिक अध्ययन*, वाराणसी: सुभारती प्रकाशन।
- [7]. राधाकृष्णन, एस. एस. (2014). *श्रीमद्भगवद्गीता*, नई दिल्ली: हार्पर कोलिंग्स पब्लिशर्स।
- [8]. राधाकृष्णन, एस. एस. (2017). *भारतीय दर्शन - 1 संशोधित संस्करण 2017*, नई दिल्ली: राजपाल एण्ड संस।
- [9]. वाई, एस. पी. (2018). *ईश्वर – अर्जुन संवाद श्रीमद्भगवद्गीता (प्रथम संस्करण 2017)*, कोलकाता: योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ़ इण्डिया।
- [10]. त्रिपाठी, पी. एन. (2018). *शोध प्रविधि एवं सांख्यिकी*, वाराणसी: सुभारती प्रकाशन।
- [11]. पोद्दार, एच. पी. (2020). *संक्षिप्त महाभारत खण्ड-1*, गोरखपुर : गीता प्रेस। Retrieved 23/01/2026/ from <https://archive.org/details/sankshipt-mahabharat-vol-1-gita-press-gorakhpur/page/n495/mode/2up>
- [12]. शर्मा, बी. एवं अग्रवाल, एन. (2022). *वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन*, IJCRT, Vol. 10, Issue 5, ISSN 2320-2882 Retrieved 24/01/2026/ from www.ijcrt.org
- [13]. मुकुंदानंद, एस. (2025). *श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय दो: सांख्य योग*। Retrieved 24/01/2026/ from <https://www.holy-bhagavad-gita.org/chapter/2/verse/50/>

Conflict of Interest Statement: *The authors declare that there is no conflict of interest regarding the publication of this paper.*

Generative AI Statement: *The author(s) confirm that no Generative AI tools were used in the preparation or writing of this article.*

Publishers Note: *All statements made in this article are the sole responsibility of the authors and do not necessarily reflect the views of their affiliated institutions, the publisher, editors, or reviewers. Any products mentioned or claims made by manufacturers are not guaranteed or endorsed by the publisher.*

Copyright © 2026 **Dr. Sanjay Kumar, Poonam Yadav.** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY). The use, distribution or reproduction in other forums is permitted, provided the original author and the copyright owner are credited and that the original publication in this journal is cited, in accordance with accepted academic practice. No use, distribution or reproduction is permitted which does not comply with these terms.

This is an open access article under the CC-BY license. Know more on licensing on <https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>



Cite this Article

Dr. Sanjay Kumar, Poonam Yadav. A Study of the Relevance of the Teachings Enshrined in the Shrimad Bhagavad Gita in the Context of a Developed India. International Research Journal of Engineering & Applied Sciences (IRJEAS). 14(1), pp. 45-52, 2026. <https://doi.org/10.55083/irjeas.2026.v14i01005>